रणमल्ल छंद

[वीर-रसात्मक राजस्थानी चरित-काव्य]

•

संपादक

मूलचन्द 'प्राणेश'

•

प्रस्तावना

डा. रघुबीरसिंह, डी० लिट्०

भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान

बीकानेर (राजस्थान)

दो शब्द

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' के संबंध में सर्वप्रथम गुजराती में स्वर्गीय रा. ब. केशवलाल ह० ध्रुव और कन्हैयालाल मा० मुंशी ने प्रकाश डाला है। इस काव्य के साहित्यिक-सौष्ठव पर जितना अध्ययन अपेक्षित था, वह तब नहीं हो पाया। विश्वविद्यालय-स्तर पर राजस्थानी भाषा व साहित्य विषयक शोध-संभावनाएं अत्यन्त विस्तृत हो गई हैं। इसी संभावना की परिपूर्ति की दृष्टि से 'प्रतिष्ठान' द्वारा 'भारतीय विद्या मंदिर ग्रंथमाला' के अंतर्गत 'रणमल्ल छंद' का संपादन-कार्य हाथ में लिया गया।

वीर रणमल्ल अपने समय का महान् योद्धा था। प्रस्तुत काव्य में उसके शौर्य की गाथा अंकित है। लघुकाय खंडकाव्य होते हुए भी यह पश्चिमोत्तर भारत की तत्युगीन उथल-पुथल का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। केन्द्रीय सत्ता के निर्बल हो जाने की स्थिति में सुदूर प्रदेश-स्थित स्थानीय उद्भट शासक किस प्रकार सत्ता के लिये सिरदर्द बन जाते थे और धर्मान्ध मुस्लिम सूबेदारों से अपनी कतिपय मानवीय मान्यताओं के लिए किस प्रकार साहस और जीवट के साथ लोहा लिया करते थे, इसका समुज्ज्वल उदाहरण वीर रणमल्ल का उदात्त चरित्र है।

फारसी तवारीखों में स्थानीय युद्धों का उल्लेख न होना अथवा तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाना, ऐतिहासिक दृष्टि से जो एक कमी है, उसकी पूर्ति देशी स्रोतों से संभव है। अतः ऐतिहासिक तथ्यों की परिपूर्णता की दृष्टि से 'रणमल्ल छंद' जैसे ऐतिहासिक-काव्यों का प्रकाशन, विज्ञ अध्येताओं व पाठकों के लिए आवश्यक है।

डा० रघुबीरसिंहजी ने अपनी प्रस्तावना में काव्य के ऐतिहासिक तत्वों की जो समीचीन व्याख्या प्रस्तुत की है, उससे काव्य में निहित सामाजिक व सांस्कृतिक अंतर्धारा सुस्पष्ट हो गई है। प्रस्तुत काव्य में वर्णित प्रमुख युद्ध—रणमल्ल व जफरखां के मध्य—की संपुष्टि डा० साहब ने विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से भली प्रकार से की है। इसके अतिरिक्त अन्य—विशेषतः जफरखान प्रथम व शमसुद्दीन अबू राजा के साथ हुए—युद्धों के संबंध में जो गवेषणापूर्ण अभिमत प्रकट किया है, वह बड़ा मूल्यवान है। उनकी प्रस्तावना से सबसे बड़ा लाभ यह मिला है कि काव्य और उसकी विषय-वस्तु के संबंध में अब तक चले आ रहे मतभेदों का निराकरण हो गया है।

वयोवृद्ध डा० रघुबीरसिंहजी ने अति-व्यस्त रहते हुए भी जिस स्नेह व सौहार्द के साथ प्रस्तावना लिखने की कृपा की है; उसके लिए मैं स्वयं तथा संस्था की ओर से आभार मानता हूं।

'प्रतिष्ठान' ने रणमल्ल छंद के संपादन-प्रकाशन का कार्य हाथ में लेकर जो लक्ष्य-पूर्ति करनी चाही थी, उसे मूर्त्त रूप में देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इसमें श्री मूलचन्द 'प्राणेश' का कार्य विशेष सराहनीय है। इस संबंध में समय-समय पर संस्था की विचार-गोष्ठियों में सर्वश्री रामेश्वरप्रसाद पांडिया, चन्द्रदान चारण, सूर्यशंकर पारीक, माणक तिवारी 'बंधु' का उल्लेखनीय सहयोग रहा है।

भा. वि. मं. शोध प्रतिष्ठान,
बीकानेर (राजस्थान)
नवरात्रि-स्थापना, सं० २०२६ वि०

सत्यनारायण पारीक
संचालक

• ···मेरी दृष्टि में इस प्रकार की कृति एम०ए० कक्षाओं के पाठ्यक्रम में आनी चाहिए।

—डा० कन्हैयालाल सहल, पिलानी

• ···'रणमल्ल छंद' राजस्थान का जाज्वल्यमान रत्न है। इसका सम्पादन कर आपने महान् कार्य किया है। इसकी दुरूह ग्रंथियों का भंजन आपसे राजस्थानी के विद्वान ही कर सकते हैं और आपने अपने सतत प्रयत्न से यह कार्य पूर्ण किया, यह हमारा सौभाग्य है।

—डा० दशरथ शर्मा, जोधपुर

• ···इसकी भाषा-कविता कुछ कठिन है। इसलिए इसके एक सटीक संस्करण की बड़ी आवश्यकता थी। उसकी पूर्ति आपने की है। आपकी सरल और सुलझी हुई टीका पाठक का मार्ग-दर्शन करेगी।

—डा० मोतीलाल मेनारिया, उदयपुर

• ···राजस्थानी के आदिकालीन श्रेणी के ऐसे काव्य-ग्रन्थों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन के साथ-साथ अन्य साहित्यिक दृष्टियों से भी अत्यधिक महत्व है। आपने इसके संपादन में भरपूर पाण्डित्य और परिश्रम का प्रदर्शन किया है, जो आप जैसे प्राचीन राजस्थानी-भाषा एवं साहित्य के मर्मी की ही क्षमता का कार्य है। संपादन बेहद सुन्दर हुआ है।

—सौभाग्यसिंह शेखावत, चोपासनी

• ···आपने इस ग्रंथ को अत्यन्त सुरुचिपूर्ण ढंग से सम्पादन करके साहित्य और इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ही नहीं, एक अद्वितीय काम किया है।

—आ० बदरीप्रसाद साकरिया, वल्लभविद्यानगर

• ···'रणमल्ल छंद' पुस्तक का प्रकाशन देख कर हर्ष हुआ। निश्चय ही आपने बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

—डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', उदयपुर

• ···अभी तक हिन्दी-साहित्य के इतिहास में इस कृति का केवल नामोल्लेख ही हुआ करता था तथा इसकी ऐतिहासिकता से बहुत कम परिचय कराया जाता था, लेकिन उस कमी को आपने इसे सुन्दर रीति से सम्पादित करके दूर कर दी है।

—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर

• ···'रणमल्ल छंद' की विस्तृत भूमिका, मूल पाठ, पाठ भेद और भावार्थ के साथ शब्दकोश भी प्रसिद्ध करके आपने अपभ्रंश-राजस्थानी-साहित्य की बड़ी सेवा की है।

—डा० नारायण म० कन्सारा, अहमदाबाद